B A Sub Paper I

[redacted]

Page No.: 1

Date:

Que. सामाजिक संरचना की परिभाषा दीजिए तथा इसकी आलोचनात्मक व्याख्या करें।

Define Critically social structure. Discuss its Characteristics.

Ans. सामाजिक संरचना से समाज के ढाँचे का बोध होता है। जिस प्रकार मूर्त वस्तुओं का एक ढाँचा होता है, उसी प्रकार अमूर्त वस्तुओं का भी एक ढाँचा होता है। मानव शरीर की प्राणिशास्त्रीय संरचना होती है उसी प्रकार समाज का भी एक ढाँचा होता है। यह अमूर्त है क्योंकि इसका निर्माण सामाजिक सम्बन्ध के अन्तः सम्बन्धों के प्रतिमानों द्वारा होता है। अतः ~~सामाजिक~~ समाज के विभिन्न अंग समाज की जिस रूपरेखा अथवा ढांचे की रचना करते हैं, सामाजिक संरचना कहा जाता है।

सामाजिक संरचना की अवधारणा को समझने के लिए परिभाषाओं की चर्चा आवश्यक है। इनमें से प्रमुख परिभाषाएँ इस प्रकार है —

कार्ल मैनहीम (Karl Manheim) के अनुसार "सामाजिक संरचना अन्तः क्रियात्मक सामाजिक शक्तियों का जाल है, जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार के निरीक्षणों तथा चिन्तन की विभिन्न पद्धतियों का विकास हुआ है।"

पारसन्स (Parsons) के अनुसार "सामाजिक संरचना शब्द को परस्पर

सम्बन्धित संस्थाओं, एजेन्सियों, सामाजिक प्रतिमानों तथा समूह में प्रत्येक सदस्य द्वारा ग्रहण किये जाने पदों व कार्यों की विशेष क्रमबद्धता के लिए प्रयुक्त किया जाता है।"

एच. एम० जानसन (H.M Johnson) के अनुसार, " किसी भी वस्तु की संरचना उसके अंगों में पाये जाने वाले अपेक्षाकृत स्थायी अन्त: सम्बन्धों को कहते हैं, साथ ही अंग सम्बन्धों में कुछ स्थिरता की भावना का समावेश होता है। चूँकि समाज की व्यवस्था व्यक्तियों की इन परस्पर सम्बन्धित क्रियाओं से बनी है इस कारण इसकी संरचना को इन क्रियाओं में पायी जानेवाली नियमितता की मात्रा या पुनरुक्ति में खोजना चाहिए।"

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार "समूह निर्माण के विभिन्न रूप संयुक्त रूप से सामाजिक संरचना के जटिल प्रतिमान की रचना करते हैं। सामाजिक संरचना के विश्लेषण में सामाजिक प्राणियों की विविध मनोवृत्तियों तथा रुचियों के कार्य प्रदर्शित होते हैं।"

आलोचनात्मक व्याख्या (Critical Analysis): उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि विभिन्न समाजशास्त्रियों ने सामाजिक संरचना को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा है।

(i) कार्ल मैनहीम की परिभाषा के अनुसार सामाजिक संरचना का अभिप्राय अन्तः क्रियात्मक सामाजिक शक्तियों के जाल से है। जाल (Web) शब्द को मैनहीम ने एक व्यवस्थित प्रतिमानों के रूप में प्रयुक्त किया है। एक जाल के विभिन्न तारों के बीच एक क्रमबद्धता होती है, इसी प्रकार सामाजिक संरचना भी एक क्रमबद्धता को प्रदर्शित करती है। मैनहीम ने सामाजिक संरचना के स्पष्टीकरण के लिए सामाजिक शक्तियों (Social Forces) की चर्चा की है।

(ii) पारसन्स ने सामाजिक संरचना को विभिन्न संस्थाओं, अभिकरणों तथा सामाजिक प्रतिमानों के संयुक्त रूप में विश्लेषित करने का प्रयास किया है। पारसन्स के अनुसार जो सामाजिक संरचना की इकाइयाँ हैं एक दूसरे से पृथक रहकर वे सामाजिक संरचना का निर्माण नहीं करते। इन इकाइयों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध होता है जो कि सामाजिक प्रतिमानों का निर्माण करता है। इसके अतिरिक्त सामाजिक संरचना के अन्तर्गत रीति रिवाजों रूढ़ियों तथा संस्थाओं द्वारा प्रत्येक सदस्य के कार्य तथा पद पूर्व निश्चित रहते हैं।

Page No.:
Date: / /

(iii) मुकर्जी तथा पैन के अनुसार "सामाजिक संरचना अखण्ड नहीं है। यह विभिन्न खण्डों जैसे परिवार, समूह, समुदाय, जाति, वर्ग, राज्य आदि के योग से निर्मित होती है। इस संयुक्त योग को ही सामाजिक संरचना कहा जाता है। अतः सामाजिक संरचना के विश्लेषण में इन सभी अंगों का समावेश किया जाना चाहिए।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सामाजिक संरचना की अवधारणा के बारे में विभिन्न लेखकों के विचारों में काफी अन्तर है किन्तु इस अन्तर के बावजूद भी सभी विचारक इस मत से सहमत हैं कि समाज के अन्तर्गत अनेक अंगों का समावेश होता है और इन अंगों के पारस्परिक सम्बन्ध अथवा क्रमबद्धता का दूसरा नाम ही सामाजिक संरचना है।

Date - 14/01/2022

Vijant Kumar Mishra
Asst Prof (Guest Faculty)
Dept of Sociology
Date. ~~[illegible]~~
~~[illegible]~~/07/2021